

**International Journal of Innovative Research in Science,
Engineering and Technology**

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

जनसंख्या प्रवास एवं स्थानीय विकास (जनपद बहराइच का एक प्रतीक अध्ययन)

डॉ सर्वेश्वर नाथ सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल, एम. एल. के. पी जी कॉलेज बलरामपुर (यू.पी.)

जनसंख्या हस्तांतरण या पुनर्वास एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में लोगों के एक बड़े समूह का आंदोलन है, जो अक्सर राज्य की नीति या अंतर्राष्ट्रीय प्राधिकरण द्वारा और अक्सर जातीयता या धर्म के आधार पर बल्कि आर्थिक विकास के कारण मजबूर प्रवासन का एक रूप है। अब तक हमने भारत के प्राकृतिक संसाधनों के बारे में जानकारी हासिल की। इन संसाधनों के अन्तर्गत भूमि, मृदा, जल, वन, खनिज तथा वन्य-जीव इत्यादि आते हैं। हमने इन उपरोक्त संसाधनों के वितरण एवं दोहन की दर एवं दिशा तथा विकास के कार्यक्रमों में उनकी उपयोगिता के बारे में भी जानकारी प्राप्त की। इन्हीं संसाधनों का यहाँ के देशवासियों के सन्दर्भ में अध्ययन करना है। लोगों या जनता से अभिप्राय यहाँ की जनसंख्या को केवल उपभोक्ता की संख्या के रूप में ही नहीं बल्कि उन्हें यहाँ के प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धक के रूप में मानने से है।

इसके लिये सही मायने में लोगों के शैक्षिक तथा स्वास्थ्य स्तर, उनके व्यावसायिक, तकनीकी एवं सामाजिक दक्षता पर ध्यान देते हैं। और इससे भी अधिक लोगों की आकांक्षाओं एवं प्रचलित मान्यताओं के साथ कार्य नीति पर ध्यान देने की जरूरत है। इस संदर्भ में आप अनुभव करेंगे कि लोग प्राकृतिक संसाधनों के केवल उपभोक्ता ही नहीं अपितु ये देश की अनमोल परिसम्पत्ति हैं। इस पाठ में हम भारत की जनसंख्या के आकार का मूल्यांकन विश्व जनसंख्या के सन्दर्भ में करेंगे। इसलिये पहले जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व तथा इन पहलुओं को प्रभावित करने वाली विभिन्न कारकों का अध्ययन करेंगे। अन्त में जनसंख्या में वृद्धि करने वाली प्रवृत्तियों तथा उन्हें प्रभावित करने वाले निर्धारकों के साथ परिणामों का भी विश्लेषण करेंगे।

बहराइच जिला भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के जिलों में से एक है , और बहराइच शहर जिला मुख्यालय है। बहराइच जिला देवीपाटन डिवीजन का एक हिस्सा है ।

अध्ययन क्षेत्र:-

अत्यन्त प्राचीन काल से लेकर मध्ययुग तक के लम्बे ऐतिहासिक काल में विश्व की जनसंख्या बहुत घीमी गति से ही बढ़ी। तब जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि भी अनेक कारणों से बहुत सीमित बनी रही। सन् 1650 में विश्व की जनसंख्या केवल 55 करोड़ थी, किन्तु 1970 में यह 370 करोड़ हो गयी। यह बड़ा रोचक तथ्य है कि लगभग 10 लाख वर्षों में विश्व की जनसंख्या घीरे-घीरे 55 करोड़ हो पायी थी, जबकि अगले 300 वर्षों में यह 6 गुनी अधिक बढ़ी (1960 में) और उसके बाद पिछले 37 वर्षों में (1996) में यह 565 करोड़ हो गयी तथा वर्ष 2006 में 650 करोड़ हो गयी। इसे अभूतपूर्व वृद्धि कह सकते हैं। वृद्धि की दर आरम्भ में काफी घीमी रही है जबकि 1950 के बाद इसमें उल्लेखनीय वृद्धि हुई।[1]

बहराइच ने अवध के नवाबों के तहत एक निजामत का गठन किया। [1] 1827 के कुछ समय बाद, यह गोंडा के साथ एक निजामत में शामिल हो गया। [1] 1856 की शुरुआत में अंग्रेजों द्वारा अवध पर कब्जा करने के बाद, बहराइच को बहराइच डिवीजन की सीट बना दिया गया। [1]

बहराइच ऐतिहासिक अवध में था। जिला नानपारा तालुकदारी का हिस्सा था, जो राजाओं के उत्तराधिकार द्वारा शासित था, जो जिले के तीन सौ से अधिक गांवों और सभी जंगलों के मालिक थे। राजा बलदेव सिंह ने बाद में सआदत अली द्वारा कब्जा कर लिया गया एक किला बनाया है। उनकी याद में बहराइच में हर साल एक प्रसिद्ध दरगाह शरीफ मेला आयोजित किया जाता है।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

उच्च अचल अवस्था High Stationary Stage

इस श्रेणी के अन्तर्गत वे देश आते हैं जिनकी मृत्यु दर और जन्म दर दोनों ही उँची हैं। जन्म दर प्रति 1,000 पीछे 40 से 50 और मृत्यु दर भी लगभग उतनी ही है। अतः दोनों दरों के समान होने के कारण जनसंख्या की वृद्धि नहीं के बराबर होती है। इन देशों की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि आदि पर ही निर्भर है। यदि जनसंख्या में वृद्धि होती है तो अकाल, महामारियों, बाढ़, आदि से बहुत हानि होकर जनसंख्या में कमी भी हो जाती है। इस प्रकार के क्षेत्रों में अफ्रीका में नाइजरिया,, सूडान, इथियोपिया, तंजानिया, अंगोला, घाना, मोजाम्बिक, एशिया में अरब, तिब्बत और नेपाल हैं। अब यहाँ पर स्वास्थ्य की दशाओं में सुधार के साथ-साथ मृत्युदर तेजी से घटती जा रही है, अतः यह देश भी दूसरी अवस्था में आते जा रहे हैं।[2]

शीघ्र वृद्धि वाली अवस्था Early Expanding Stage

इस श्रेणी के अन्तर्गत वे देश सम्मिलित किए जाते हैं, जिनकी जन्म दर तो अधिक होती है, किन्तु स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाओं के बढ़ जाने के कारण मृत्यु दर में कमी हो गयी है। इनकी जन्म एवं मृत्यु दर क्रमशः 40 और 15 प्रति 1,000 होती है, अतः जनसंख्या में अधिक वृद्धि होती है। इस श्रेणी के देशों में कृषि के साधन उत्तम हैं, उत्तम प्रकार की खाद, बीज और सिंचाई के सहारे अकाल तथा सूखे पर विजय प्राप्त कर अधिक भोज्य पदार्थ उत्पन्न किए जाते हैं। खनिज पदार्थों वाले क्षेत्रों में औद्योगीकरण भी हो रहा है। इस प्रकार के क्षेत्रों के मुख्य देश एशिया में भारत, म्यांमार, श्रीलंका, मलेशिया, थाईलैंड, लाओस, इंडोनेशिया, फिलिपीन्स, ताइवान, वियतनाम, कम्बोडिया, कोरिया गणतंत्र, तुर्की, इजराइल, ईरान, इराक, अफ्रीका में लीबिया, अल्जीरिया, मोरक्को, मिस्र, मेडागास्कर, मध्य अफ्रीका लैटिन अमरीका के देश (चिली, यूरुग्वे और अर्जेण्टाइना को छोड़कर) हैं।

विलम्ब से वृद्धि वाली अवस्था Late Expanding Stage

इस प्रकार की अवस्था की मुख्य विशेषता जन्म और मृत्यु दर में कमी होना है। इन देशों में जन्म दर 10 से 16 और मृत्यु दर से 12 प्रति 1,000 है। इस प्रकार के क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था में उन्नत और आधुनिक प्रकार की कृषि और उद्योग का मुख्य स्थान है। उद्योग-धन्धों की वृद्धि के कारण जनसंख्या शहरों में अधिक रहने लगती है। रूस, जापान, अर्जेण्टाइना, पोलैण्ड, बल्गारिया, रोमानिया, यूगोस्लाविया, इटली, स्पेन, चिली और यूरुग्वे इस श्रेणी के प्रमुख देश हैं।[3,4]

निम्न अचल अवस्था Low Stationary Stage

इस प्रकार के क्षेत्रों में जन्म और मृत्यु दर दोनों ही कम होती हैं। (साधारणतः 8 और 12 प्रति ,000 पीछे, अतः जनसंख्या प्रायः स्थिर है। इस प्रकार के देशों को भविष्य में जनसंख्या के घटने का डर है, अतएव वे अपनी जनसंख्या को बढ़ाने के निमित्त कई उपाय काम में ला रहे हैं, यथा कुंवारे स्त्री पुरुषों को अधिक कर देना पड़ता है, विवाहित स्त्री पुरुषों को प्रति सन्तान पीछे उसके भरण-पोषण के लिए राज्य से विशेष भत्ता मिलता है। परिवार की यात्रा, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं तथा मनोरंजन के साधनों का भी व्यय दिया जाता है। इस श्रेणी के मुख्य देश पश्चिमी, उत्तरी और मध्यवर्ती यूरोप के देश बेल्जियम, डेनमार्क, न्यूजीलैण्ड, ब्रिटेन, स्विट्जरलैण्ड, चैक व स्लोवाक गणराज्य, रूस आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, आदि हैं, एशिया का कोई भी देश इस श्रेणी के अन्तर्गत नहीं आता।

हास होती हुई अवस्था Declining Stage

इस श्रेणी में वे क्षेत्र आते हैं, जिनमें मृत्यु दर अधिक होने के कारण जनसंख्या घटती जा रही है और इसलिए इन देशों की जनसंख्या समस्या जाति-आत्महत्या (Race suicide) की है। इस प्रकार के मुख्य देश फ्रांस व ब्रिटेन के विशेष क्षेत्र हैं। यह एक उल्लेखनीय तथ्य है कि उपर्युक्त पाँच अवस्थाओं में से होती हुई किसी देश की जनसंख्या अपनी सन्तुलन अवस्था को कब तक प्राप्त हो जाती है। पश्चिमी यूरोप के देश इन सभी अवस्थाओं में से गुजरते हुए अन्तिम अवस्था के निकट पहुँच चुके हैं। एशियाई देशों में चीन, भारत, पाकिस्तान, आदि सभी दूसरी अवस्था में से गुजर रहे हैं। इसलिए इनमें मृत्यु दर नीचे गिर रही है, फलतः इन देशों में जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है। अब चीन व भारत में भी जन्म दर भी घटने लगी है। 2010 के पश्चात् यही देश तीसरी अवस्था में पहुँच सकेंगे।[5,6]

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

विश्व में जनसंख्या का विकास

वर्ष	जनसंख्या (लाख)	वर्ष	जनसंख्या (लाख)
ई. पू. 5000	20.00	1950	25,000
सन् प्रारम्भ	25.60	1960	30,000
1000 ई. सन्	30.00	1970	37,000
1300 ई. सन्	40.00	1980	44,100
1656	55.00	1991	54,800
1750	70.00	2002	62,111
1800	120.00	2006	65,000
1900	16,000	2050 अनुमानित	92,000
1920	18,000		

अभी हाल ही में UNO द्वारा अनुमान लगाया गया है कि सन् 2050 तक विश्व की जनसंख्या 920 करोड़ के लगभग हो जाएगी। एक अन्य वैज्ञानिक के अनुसार 2060 तक विश्व के धरातल पर जनसंख्या इतनी बढ़ जाएगी कि एक व्यक्ति को भूमि पर रहने के लिए केवल एक वर्ग मीटर ही भूमि उपलब्ध होगी, किन्तु तब तक अधिकांश देशों की वृद्धि दर 1.5 प्रतिशत प्रतिवर्ष से भी नीचे पहुँच जाएगी।

सामाजिक आर्थिक प्रभाव

सामाजिक आबादी के बारे में लोगों को जानकारी देना, उसका वर्णन करना और समझाना एवं यह पता लगाना कि लोगों की पहुँच का स्तर क्या है, यह न केवल सामाजिक विज्ञानियों के लिये बल्कि नीति निर्माताओं और सरकार के लिये भी महत्वपूर्ण है। इस संबंध में भारत की जनगणना इस तरह के सबसे बड़े आयोजनों में से एक है जिसके माध्यम से भारतीय आबादी से संबंधित जनसांख्यिकीय और सामाजिक-आर्थिक जानकारी एकत्र की जाती है। हालाँकि जनगणना के आलोचक इसे डेटा संग्रह का एक प्रयास और शासन की तकनीक के रूप में मानते हैं, लेकिन एक जटिल समाज की विस्तृत और व्यापक समझ के लिये यह पर्याप्त रूप से उपयोगी नहीं है। इस संदर्भ में सामाजिक-आर्थिक और जातिगत जनगणना (Socio-Economic and Caste Census-SECC) आयोजित की गई थी, लेकिन इसके अपने अन्य मुद्दे हैं।[7,8]

जनगणना:

- भारत में जनगणना की शुरुआत औपनिवेशिक शासन के दौरान वर्ष 1881 में हुई।
- जनगणना का आयोजन सरकार, नीति निर्माताओं, शिक्षाविदों और अन्य लोगों द्वारा भारतीय जनसंख्या से संबंधित आँकड़े प्राप्त करने, संसाधनों तक पहुँचने, सामाजिक परिवर्तन, परिसीमन से संबंधित आँकड़े आदि का उपयोग करने के लिये किया जाता है।
- 1940 के दशक की शुरुआत में वर्ष 1941 की जनगणना के लिये भारत के जनगणना आयुक्त 'डब्ल्यू. डब्ल्यू. एम यीट्स' ने कहा था कि जनगणना एक बड़ी, बेहद मज़बूत अवधारणा है लेकिन विशेष जाँच के लिये यह एक अप्रशिक्षित साधन है।" सामाजिक-आर्थिक और जातिगत जनगणना:
- वर्ष 1931 के बाद इसे पहली बार आयोजित किया गया था।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

- SECC का आशय ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में प्रत्येक भारतीय परिवार से उनके बारे में निम्न स्थितियों के बारे में पता करना है-
 - आर्थिक स्थिति पता करना ताकि केंद्र और राज्य के अधिकारियों को वंचित वर्गों के क्रमचयी और संचयी संकेतकों की एक शृंखला प्राप्त हो सके, जिसका उपयोग प्रत्येक प्राधिकरण द्वारा एक गरीब या वंचित व्यक्ति को परिभाषित करने के लिये किया जा सकता है।
 - इसका अर्थ प्रत्येक व्यक्ति से उसका विशिष्ट जातिगत नाम पूछना है, जिससे सरकार को यह पुनर्मूल्यांकन करने में आसानी हो कि कौन से जाति समूह आर्थिक रूप से सबसे खराब स्थिति में थे और कौन बेहतर थे।
- SECC में व्यापक स्तर पर 'असमानताओं के मानचित्रण' की क्षमता है।[9]

जनगणना और SECC के बीच अंतर:

- जनगणना भारतीय आबादी का एक समग्र चित्र प्रस्तुत करती है, जबकि SECC राज्य द्वारा सहायता के योग्य लाभार्थियों की पहचान करने का एक उपाय है।
- वर्ष 1948 के जनगणना अधिनियम के तहत सभी आँकड़ों को गोपनीय माना जाता है, जबकि SECC की वेबसाइट के अनुसार, "SECC में दी गई सभी व्यक्तिगत जानकारी का उपयोग कर सरकारी विभाग परिवारों को लाभ पहुँचाने और/या प्रतिबंधित करने के लिये स्वतंत्र हैं।"[10]

SECC से जुड़ी विभिन्न चिंताएँ:

- जातिगत जनगणना का प्रभाव: जातिगत जनगणना में एक भावनात्मक तत्त्व निहित होता है जिसके राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव होते हैं।
 - इस बात पर चिंता जताई गई है कि जातिगत गणना किसी जाति की पहचान को मज़बूत बनाने में मदद कर सकती है।
 - इन शंकाओं के कारण SECC के जारी होने के लगभग एक दशक बाद इसके आँकड़ों की बड़ी मात्रा जारी नहीं की गई या कई भागों में जारी की गई।
 - जाति की परिस्थितिजन्य विशेषता: भारत में जाति कभी भी वर्ग या अभाव के संदर्भ में एक प्रतिनिधि के रूप में नहीं रही है, यह एक विशिष्ट प्रकार के अंतःस्थापित भेदभाव को बढ़ावा देती है जो प्रायः वर्ग स्थानांतरण को प्रोत्साहित करता है। [13] आगे की राह:
 - मौजूदा आँकड़ों का उपयोग: हालाँकि SECC की अपनी बड़ी चिंताएँ हैं, परंतु जनगणना में एकत्रित डेटा को अन्य बड़े डेटासेटों से जोड़ा जा सकता है जिससे राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण सरकारों को SECC के इच्छित लाभों से संबंधित जानकारी देने में सहायता कर सकता है।
 - राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण उन मुद्दों को कवर करता है जो जनगणना में शामिल नहीं होते हैं- जैसे कि- मातृ स्वास्थ्य, भूमि और संपत्ति के स्वामित्व की जानकारी, उपभोग व्यय, रोज़गार की प्रकृति जो कि अधिक व्यापक विश्लेषण के लिये महत्वपूर्ण हैं।
 - डिजिटल विकल्प: अतनु बिस्वास जैसे सांख्यिकीविद् बताते हैं कि दुनिया भर में जनगणना अभियान महत्वपूर्ण बदलावों से गुज़र रहे हैं, जो सटीक, तेज़ और लागत प्रभावी डिजिटल तरीकों को नियोजित करने का प्रयास करते हैं।
 - हालाँकि डिजिटल विकल्प और जनगणना कार्यों से जुड़े आँकड़ों को विभिन्न स्रोतों के साथ जोड़ना समावेशी और गैर-भेदभावपूर्ण है, परंतु डेटा की संवेदनशील प्रकृति को ध्यान में रखा जाना चाहिये।[10,12]
- बहराइच की सीमा उत्तर-पश्चिम में नेपाल के जिलों बर्दिया और उत्तर- पूर्व में बांके से लगती है । शेष बहराइच उत्तर प्रदेश में निम्नलिखित जिलों से घिरा हुआ है: पश्चिम में लखीमपुर और सीतापुर , दक्षिण-पश्चिम में बाराबंकी, दक्षिण-पूर्व में गोंडा और पूर्व में श्रावस्ती ।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

ऐतिहासिक जनसंख्या		
वर्ष	पॉप।	±% प्रति वर्ष
1901	764,477	-
1911	761,611	-0.04%
1921	774,317	+0.17%
1931	825,923	+0.65%
1941	901,675	+0.88%
1951	978,553	+0.82%
1961	1,098,695	+1.16%
1971	1,282,218	+1.56%
1981	1,672,410	+2.69%
1991	2,090,852	+2.26%
2001	2,701,478	+2.60%
2011	3,487,731	+2.59%

स्रोत: [3]

के अनुसार 2011 की जनगणना के बहराइच जिले में एक है जनसंख्या 3,487,731 की, [4] यह है कि यह एक भारत में 89 की रैंकिंग (के कुल से बाहर देता है 640)। [4] जिले का जनसंख्या घनत्व 706 निवासी प्रति वर्ग किलोमीटर (1,830/वर्ग मील) है। [4] 2001-2011 के दशक में इसकी जनसंख्या वृद्धि दर 46.08% थी। [4] बहराइच एक है लिंग अनुपात 891 की महिलाओं हर 1000 पुरुषों के लिए, [4] और एक साक्षरता दर 49.32% की। बहराइच एक श्रेणी "ए" जिला है, जिसका सामाजिक-आर्थिक और बुनियादी सुविधाओं के मानदंड राष्ट्रीय औसत से नीचे हैं। [5] भारत की 2011 की जनगणना के समय, जिले की 92.71% आबादी अपनी पहली भाषा के रूप में हिंदी बोलती थी। [6]

निष्कर्ष

हालाँकि जनगणना अधिकारी पारदर्शिता की नीति के एक भाग के रूप में कार्यप्रणाली पर दस्तावेज़ प्रस्तुत करते हैं, फिर भी जनगणना और SECC के कार्यकर्ताओं के साथ-साथ जनगणना और SECC के अधिकारियों के बीच घनिष्ठ और निरंतर जुड़ाव की आवश्यकता है, क्योंकि जनगणना और SECC शासन के साथ-साथ शैक्षणिक हित से संबंधित प्रक्रियाएँ हैं। [11,14]

संदर्भ


1. "अमेरिकी जनगणना ब्यूरो - विश्व पोप क्लोक प्रोजेक्शन". मूल से 3 जनवरी 2010 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 जनवरी 2010.
2. ↑ "Cities in Nigeria: 2005 Population Estimates — MongaBay.com". मूल से 25 नवंबर 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2008-07-01.
3. ↑ "Country Profile: Nigeria". मूल से 12 नवंबर 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2008-07-01.
4. ↑ इस तक ऊपर जायें:अ आ १०,००० ई.पू. के बाद की आबादी Archived 2010-01-18 at the Wayback Machine और १००० ई.पू. के बाद की आबादी Archived 2010-01-18 at the Wayback Machine को रेखांकन के रूप में वर्णित किया गया है
5. ↑ "बीबीसी न्यूज़ | भारत की हरित क्रांति का अंत?". मूल से 7 मार्च 2012 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 जनवरी 2010.
6. ↑ "पहले खाद्य / खाद्य और विकास नीति संस्थान". मूल से 14 जुलाई 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 18 जनवरी 2010.
7. ↑ संयुक्त राष्ट्र Population Division (मार्च 13, 2007). World population will increase by 2.5 billion by 2050; people over 60 to increase by more than 1 billion. प्रेस रिलीज़. Archived from the original on 12 सितंबर

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

A Monthly Peer Reviewed Journal

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 3, Issue 7, July 2014

2009. अभिगमन तिथि: 2007-03-14. "The world population continues its path towards population ageing and is on track to surpass 9 billion persons by 2050."
8. ↑ "The End of World Population Growth". मूल से 10 अक्टूबर 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2008-11-04.
 9. ↑  "Theories of Population". Catholic Encyclopedia | (1913) | New York: Robert Appleton Company |
 10. ↑ अन्स्ले जे काल, "जनसांख्यिकीय संक्रमण," अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या सम्मेलन की कार्यवाही, लीग, १९७३, खंड १, पीपी. ५३-७२.
 11. ↑ प्रजनन नियंत्रण और प्रजनन क्षमता के स्तर के बीच अंतर के उदहारण के लिए, बारबरा ए एंडरसन और ब्रायन डी सिल्वर देखें, "प्रजनन क्षमता पर नियंत्रण का एक सरल उपाय," जनसांख्यिकी 29, नंबर 3 (1992): 343-356 और बी.ए. एंडरसन और बी.डी. सिल्वर, "जन्म के समय गैर प्रजनन क्षमता और लिंग अनुपात में अंतर: झिंजियांग से साक्ष्य," जनसंख्या अध्ययन 49 (1995): 211-226। प्रजनन पर नियंत्रण के मॉडल पर कोल और उनके सहयोगियों द्वारा किया गया मौलिक कार्य। उदहारण के लिए देखें, अन्स्ले जे काल और जेम्स टी ट्रासल, "मॉडल उर्वरापन अनुसूचिया: मानव जनसंख्या में प्रसव की आयु के ढांचे में बदलाव।" जनसंख्या सूचकांक 40 (1974): 185-258.
 12. ↑ "जनसंख्या नीति" पर एक चर्चा के लिए सरकारों के उपलब्ध विकल्प पॉल देमेनी देखें, "जनसंख्या नीति: एक संक्षिप्त सारांश, 'जनसंख्या परिषद, नीति अनुसंधान प्रभाग, कार्य पेपर नंबर 173 (२००३) [1] Archived 2009-10-01 at the Wayback Machine.
 13. ↑ चारलोट होन, "आधुनिक समाज में जनसंख्या नीतिया: प्रोनातालिस्ट और पलायन की रणनीतिया," यूरोपीय जनसंख्या के जर्नल / रिव्यू यूरोपीने डे डेमोग्राफी 3, नंबर 3-4 (जुलाई, 1988): 459-481.
 14. ↑ http://en.wikipedia.org/विकी/हंटिंग#वाईल्लडलाइफ_मैनेजमेंट देखें।